शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

मार्कण्डेय की कहानियों में बाल-मनोविज्ञान

निवेदिता सिंह
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
वनस्थली विद्यापीठ,
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी कहानी-साहित्य में मार्कण्डेय को आमतौर पर एक ग्रामीण-कथाकार के रूप में स्मरण किया जाता है। कथा सम्राट प्रेमचन्द के पश्चात् मार्कण्डेय ने हिन्दी कथा-जगत को एक नवीन दृष्टि से देखा। इसी क्रम में उन्होंने ग्रामीण परिवेश, बाल-मनोविज्ञान, स्त्रियों की दशा, कृषकों की दयनीय स्थिति आदि को अपनी कहानियों का विषय बनाकर अपनी एक अलग पहचान बनायी है। मार्कण्डेय की कहानियों में भले ही ग्रामीण-परिवेश और किसानों की दयनीय स्थिति की कितनी अधिकता क्यों न हो किन्तु उनका कोमल हृदय बच्चों की मासूमियत को अपनी कहानियों में शरीक करना नहीं भूलता और इसी कारण उनकी अनेक कहानियाँ बाल-मनोविज्ञान को लेकर लिखी गयी हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

व्यक्तित्व और कृतित्व

हिन्दी कथा साहित्य में विशेषतः कहानी के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाने वाले मार्कण्डेय का जन्म उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के बराई नामक गाँव में 2 मई 1930 में एक सामान्य किसान परिवार में हुआ था। मार्कण्डेय के प्रखर विचार कहीं न कहीं उन्हें विरासत में मिले थे, क्योंकि उनके पितामह, माता-पिता सभी का व्यक्तित्व अत्यन्त विशाल और व्यापक था। उनके पितामह श्री महादेव सिंह संस्कृति के अच्छे विद्वान थे और धार्मिक अंधविश्वासों के प्रबल विरोधी थे। इनकी माता अत्यन्त सहृदय और धर्मभीरू स्त्री थी। गाँव में गरीब, निसहाय लोगों की मदद करने के लिए सदैव तत्पर रहती थी। मार्कण्डेय के हृदय में गरीबों के प्रति जो लगाव, अपनापन था वह उनकी दयालु माँ के कारण ही था। कहानीकार मार्कण्डेय के पिता तालुकदार सिंह अपने सम्बन्धी की एक छोटी-सी रियासत की देखभाल किया करते थे। अपने बाबा के प्रति मार्कण्डेय के हृदय में अपार स्नेह था। मार्कण्डेय की माध्यमिक शिक्षा पूरी होने के पहले ही उनको दिल का दौरा पड़ा और वे पंचतत्व में विलीन हो गये। इस घटना के बाद उनके जीवन को गहरा आघात लगा। ‘‘बाबा की मृत्यु के बाद मार्कण्डेय के जीवन में एक गहरी गम्भीरता आयी। मन आन्दोलित हो उठा और ऐसी मनः स्थितियों में किस्मत ने उन्हें अवध की सड़ी-गली ताल्लुकेदारी के बीच ला खड़ा किया जहां उन्होंने जनता पर होने वाले अत्याचारों और अन्यायों को देखा। लगान की वसूली के लिए उनके साथ होने वाले पशुओं से भी बदतर सलूक को देखा, जिन्होंने उनके संस्कारों को और भी बढ़ावा दिया

जो विरासत के रूप में उन्हें अपने बाबा से मिले थे।''1

उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिय मार्कण्डेय इलाहाबाद आये और यहीं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अपनी पढ़ाई को जारी रखा। जब मार्कण्डेय इलाहाबाद आये थे उस समय ये शहर भारत की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में विख्यात था। यहीं पर उनकी मुलाकात निराला, पन्त, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा आदि अनेक साहित्यकारों से हुयी। इसके चलते मार्कण्डेय ने अमरकान्त और शेखर जोशी के साथ मिलकर नयी कहानी आन्दोलन को नयी दिशा देने वाली इस मित्रता को एक नयी त्रयी के रूप में निर्मित किया। इलाहाबाद में मार्कण्डेय प्रगतिशील लेखक संघ की गोष्ठियों में भाग लेने लगे जिसमें अनेक प्रकार की साहित्यिक चर्चाएं होती थीं। मार्कण्डेय ने शरद जयन्ती के उपलक्ष्य में अपनी पहली कहानी 'गुलरा के बाबा' का पाठ किया तो वहाँ पर उपस्थित लेखक, साहित्यकारों ने उनकी खूब प्रशंसा की। अगले महीने यही कहानी 'कल्पना' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई और बहुत चर्चित हुई। इसके पश्चात् एक-एक करके उनके आठ कहानी संग्रह प्रकाशित हुए जिनमें उन्होंने ग्रामीण परिवेश की समस्याओं पर अधिक लिखा है। इन्होंने प्रेमचन्द के बाद हिन्दी कथा-साहित्य को एक नवीन जीवन प्रदान किया।

हिन्दी कहानी-साहित्य में मार्कण्डेय को आमतौर पर एक ग्रामीण-कथाकार के रूप में स्मरण किया जाता है। कथा सम्राट प्रेमचन्द के पश्चात् मार्कण्डेय ने हिन्दी कथा-जगत को एक नवीन दृष्टि से देखा। इसी क्रम में उन्होंने ग्रामीण परिवेश, बाल-मनोविज्ञान, स्त्रियों की दशा, कृषकों की दयनीय स्थिति आदि को अपनी कहानियों का विषय बनाकर अपनी एक अलग पहचान बनायी है। मार्कण्डेय की कहानियों में भले ही ग्रामीण-परिवेश और किसानों की दयनीय स्थिति की कितनी अधिकता क्यों न हो किन्तु उनका कोमल हृदय बच्चों की मासूमियत को अपनी कहानियों में शरीक करना नहीं भूलता और इसी कारण उनकी अनेक कहानियाँ बाल-मनोविज्ञान को लेकर लिखी गयी हैं।

मार्कंडेय के कहानियाँ

मार्कण्डेय की कहानियों को पढ़ने के पश्चात् मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी चिन्तनशीलता एवं विचार क्षितिज के समान विस्तृत एवं व्यापक थे। उनकी कहानियों को पढ़ते समय मन में नये-नये आयाम खुलते हैं, उनकी कहानियाँ बहुरंगी घटनाओं को उद्घाटित करती हैं। उन नये आयामों एवं नवीन दृष्टि के रूप में बाल-मनोविज्ञान भी है जिसमें बाल-मन की सहजता, स्वाभावितकता, बाल-संस्कार, रहन-सहन, परम्परा, ग्राम्य संस्कृति आदि को उजागर करने का प्रयास किया है। बाल-मनोविज्ञान की चर्चा करते समय मार्कण्डेय की उन कहानियों का मूल्यांकन प्रासंगिक है जो बाल-मनोविज्ञान की पीठिका पर रचित हैं।

मार्कण्डेय का प्रथम संकलन 'पान-फूल' है जिसमें संग्रहीत 'पानफूल' शीर्षक कहानी में दो मासूम बच्चियों की मित्रता को रेखांकित किया गया है। छोटी बच्ची नीली जहां उच्च-वर्ग से सम्बन्धित है वहीं छोटी बच्ची रीती निम्नवर्गीय नौकरानी की लड़की है। नीली की मित्रता रीती और पूसी कुतिया से होती है। भले ही नीली और रीती के रहन-सहन में बहुत फर्क है किन्तु फिर भी दोनों की मित्रता और पूसी कुतिया का दोनों के प्रति

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

लगाव एक आत्मीयता को दर्शाता है जिसमें ऊँच-नीच, स्पृश्यता-अस्पृश्यता और मनुष्यत्व-पशुत्व के भेद के लिए कोई स्थान नहीं है। तीनों ही एक-दूसरे की भावनाओं को समझने में सक्षम है। नीली के मन में पूसी कुतिया और रीती दोनों के प्रति गहरी सहानुभूति दिखाई पड़ती है। कहानीकार ने इन तीनों की मित्रता को कहानी में इस प्रकार दर्शाया है - ''नीली, रितिया और पूसी अब हमेशा साथ रहती।' कभी गुड़िया का ब्याह रचाया जाता, तो कभी बड़े सवेरे मुंह-अँधेरे ही नीली और रीती फुलवारी वाले पारिजात के फूल बटोरने पहुँच जाती। वहाँ कोई तितली देखती, तो उसके पीछे मचल पड़ती। फिर पूसी ही क्यों पीछे रहती, उछल-उछल कर मुंह बनाकर इधर-उधर दौड़ती।''2

बच्चों में केवल निश्छल प्रेम का भाव होता है, फिर चाहे वह मानव के प्रति हो या पशु के। बच्चों में मासूमियत, अपनापन, सहयोग और आपसी प्रेम की भावना किस कदर होती है, यह बात मार्कण्डेय की 'पान-फूल' कहानी के इस अंश से पता चलता है। द्रष्टव्य है -''नीली ने कहा - मैं पान लाऊँगी और तुम रीती फूल ले आना। तालाब के बीच से फूल लेने के फेर में रीती डूबने लगी, उसे बचाने के लिए कुतिया पानी में उछल गयी, फिर नीली भी गयी। जब तक घरवाले पहुंचे तब तक ऐसी दुर्घटना हुई कि तालाब शांत और उसकी सतह पर एक डण्ठल में पान के दो पत्ते और फूल तैर रहा था।''3 कहानी के उक्त अंश में नीली और रीती के रूप में दो मासूम बच्चों का अंत तत्कालीन समाज में संवेदनशीलता, अपनेपन एवं सहयोग के अंत का प्रतीक है। 'पान और फूल' संवेदनशीलता और मासूमियत के प्रतीक हैं जो तालाब में पानी के सतह पर तैर रहे हैं। अब वे लोगों की पहुँच से बाहर हो चुके थे। इस प्रकार मार्कण्डेय ने कहानी में मानवीय रागात्मक सम्बन्धों को बड़ी सूक्ष्मता के साथ उद्घाटित किया है।

वर्ग-विषमता को सामने लाने वाली कहानी 'मिट्टी का घोड़ा' में भी एक निर्धन बच्चे की विसंगतियों को दर्शाया गया है जिसमें अमीर और गरीब दोनों बच्चों का विवरण है। कहानी में गरीब बच्चा और अमीर बच्चा दोनों सफर कर रहे होते हैं। दोनों ही बच्चों के पास घोड़ा है किन्तु फर्क यह है कि गरीब बच्चे के पास मिट्टी का ऐसा घोड़ा है जिसकी तीन टाँगे टूटी हुई हैं जबकि अमीर बच्चा अपने मखमली घोड़े को छोड़कर जब मिट्टी के घोड़े को लालसा के वशीभूत होकर छूता है तो उसकी माँ उसे डांटते हुए कहती है ''आखिर उसे छू ही लिया। मना कर रही थी, माना नहीं! डर्टी, बदतमीज।''4 मिट्टी के घोडे के प्रति बच्चे की लालसा देखकर वह अमीर महिला उस घोडे को ट्रेन से बाहर फेंककर अपने अहंकारी स्वभाव का परिचय देती है। उसे एक बार भी नहीं लगा कि वह गरीब बच्चा दूसरा खिलौना कहाँ से खरीदेगा? प्रस्तुत कहानी में अमीर और गरीब के बीच ऐसे अलगाव को दिखाया गया है जो समय और समाज की सच्चाई है।

मार्कण्डेय ने बाल-मन का मनोरम चित्रण करते हुए इस कहानी के माध्यम से यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि सारी सुख-सुविधाएँ होने के बावजूद भी अमीर बच्चा वह मिट्टी का घोड़ा पाना चाहता है जबकि गरीब बालक सहनशील होने के कारण न सिर्फ अपना खिलौना दे देता है बल्कि सदैव के लिये अपने उस टूटे खिलौने को गँवा देता है। बच्चों में ऊँच-नीच, समानता-असमानता आदि का भाव नहीं होता। यह अन्तर बड़े ही

बच्चों को सिखाते है। यह भेदभाव उस महिला के व्यवहार में स्पष्टतया देखा जा सकता है जो कि गरीब बच्चे के प्रति सहानुभूति के बजाय कठोरता प्रदर्शित करती है और अमीरी के घमण्ड में उस खिलौन को ट्रेन से बाहर फेंकती है जिसकी उसकी नजर में कोई अहमियत नहीं थी जबकि उसी टूटे खिलौन की अहमियत उस बच्चे के लिए बहुत थी जिसका खेलने का एकमात्र सहारा वह टूटा खिलौना था। डॉ.. शामराव मोरे कहते हैं - ''इस कहानी में चित्रित मिट्टी का घोड़ा गरीबी का प्रतीक है और नरम रूई का घोड़ा अमीरी का। वैसे ही कहानी में दो तरह की मानसिकता का प्रतिकात्मक चित्रण हुआ है - अमीरी और गरीबी की मानसिकता, एक नफरत को दर्शाती है और दूसरी बेबसी को।''5 कहानी में गरीब बच्चे की बेबसी को मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

मार्कण्डेय की 'जूते' कहानी में भी बालक हृदय की झांकी को प्रस्तुत किया गया है। कहानी में ग्रामीण वातावरण में पला मनोहर नाम का बालक ठाकुर के यहाँ चाकरी करता है, और मानसिक द्वन्द्व में उलझा रहता है। उसके इस द्वन्द्व का कारण है एक छोटी सी वस्तु वह है जूता। शहर से आयी बहू जी के कहने पर वह कमरे में जूते लेने जाता है तो जूते को लाल रंग का खिलौना समझकर वह वापस आ जाता है। कहानी में अन्त तक वह इसी उधेड़बुन में रहता है कि आखिर इन मखमली जूतों को पहना कैसे जाता है और इसी कौतूहल के कारण वह लागातार बच्ची के पास मंडराता रहता है। वह हर बार बहू जी को जूते पहनाते हुए देखना चाहता है किन्तु बार-बार वह इस दृश्य को देखने में असफल रहता है। कहानीकार के शब्दों में ''मैं आज बहू जी का साथ नहीं छोड़ूँगा, देखे कब बच्ची को जूते पहनाती है। फिर उसके जी में आया कह दे बच्ची को तैयार कर दीजिये, मैं लेकर चलूँ।''6 इन वाक्यों में मनोहर के बचपने के साथ ही जूतों को पहनते देखने की लालसा को बखूबी देखा जा सकता है। उसके मन में उठ रहे सवालों का जवाब उसे तभी मिलता जब वह उन जूतों को पैर में पहनते हुए देख सकता।

जूते पहनते देखने की लालसा के कारण मनोहर ठाकुर-ठकुराइन के उन अत्याचारों को भी कुछ समय के लिए भूल जाता है जो वे मनोहर को देते थे। बहू जी मनोहर के प्रति सदैव विनम्रता से पेश आती है किन्तु मनोहर को उनकी इस विनम्रता पर यकीन नहीं होता क्योंकि ठाकुर-ठकुराइन की मार ने उसके मन में भय उत्पन्न कर दिया है जिसके कारण उसे स्नेह पर भी संदेह होता है। उसका बाल मन सदैव भय से ग्रस्त रहा है जो कि कहानी में भी देखा जा सकता है। बहू जी जब गाँव से पुनः दिल्ली वापस जाती है तो मनोहर उन्हें स्टेशन तक छोड़ने जाता है और वहीं पर बहू जी उसे उपहार स्वरूप जूते प्रदान करती है, जिन्हें पैरों में पहनने के बजाय वह बगल में दबाकर कंकड व धूलभरी राह में नंगे पैर चलता है - ''पर लौटते समय पलास की पत्तियां, आग की तरह जलती धूप और जेठ की दुपहरिया, जैसे कुछ नहीं थी, क्योंकि रास्ते पर धूल थी, कंकड थे और मनोहर के बगल में एक कागज का डब्बा दबा था, जिसमें उसके लिए लाल-लाल जूते थे।''7

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने आर्थिक विषमता रूपी सामाजिक विडम्बना पर प्रहार किया है। ग्रामीण-परिवेश में पले बच्चे शहरी वातावरण से किस प्रकार अनभिज्ञ रहते हैं यह दर्शाया गया है।

कथाकार एक मासूम बच्चे को प्रश्नों के एक ऐसे जाल में फँसा देता है जिससे वो कहानी के अन्त तक नहीं निकल पाता। इसी कारण वह बहूजी द्वारा दिये जूते को एक आकर्षक वस्तु समझकर बगल में दबाकर धूल व कंकड़ भरे रास्ते में नंगे पैर चलता है। बालसुलभ जिज्ञासा, कौतुहल, आकर्षण, अन्तद्र्वन्द्व को प्रस्तुत करती हुई यह अत्यन्त मार्मिक कहानी है।

'हलयोग' संग्रह में वर्णित कहानी 'माँ जी का मोती' भी बाल-चित्रण पर आधारित है। 'माँ का मोती' में एक गरीब, दुखियारी माँ की व्यथा को उसका बेटा मोती भलीभाँति समझता है और इसी कारण वह उम्र से पहले ही समझदार हो जाता है। छोटी सी उम्र में भी स्वयं काम करता हुए अपने दोनों भाईयों को पढ़ाता है। दोनों भाई स्कूल में पढ़ने जाते हैं जबकि मोती अपनी माँ का हाथ बंटाता है। एक दिन मोती को बीमार बछिया मिल जाती है जिसकी सेवा कर वह उसे बिल्कुल ठीक कर देता है। मोती की माँ जब दूसरों के घर काम करने जाती है तो मोती को बिलकुल अच्छा नहीं लगता क्योंकि वह अपनी माँ को औरों की माँ की तरह घर में देखना चाहता है "वह बड़ा होकर माँ को दर-दर भटकने वाले इस काम से छुट्टी दिला देगा। आस-पास के बच्चों की माएं तो घर में रहती है, फिर मेरी माँ ?"8 इस प्रकार मोती के भीतर माँ के प्रति आदर भाव ही है और परिवार के प्रति जिम्मेदारी भी।

एक दिन मोती अपनी बछिया को लेकर एक मील की दूरी पर स्टेशन के पास पहुंचा। वह अपने काम में इतना खो गया कि उसे यह भी न ख्याल हुआ कि उसकी बछिया पटरी पार कर गई। अचानक दृष्टि पड़ी तो वह भागता हुआ गया। स्टेशन की सीढ़ियों पर उसे नोट से भरा पर्स मिला किन्तु उस पर्स को देखकर भी उसके मन में लेशमात्र भी लालच नहीं उपजा। वह चिल्लाकर उस पर्स के मालिक को बताने का प्रयत्न कर रहा था कि जिस किसी का भी हो वह आकर ले जाए। गरीबी से लबालब होने के बावजूद भी उसने अपनी ईमानदारी का परिचय दिया, जिसका फल उसे यह मिला कि सिपाही ने उसे इतना मारा कि वह बेहोश हो गया - "बहुत बड़ा जेबकट है। आप क्या-क्या समझेंगे! हम लोग तो रात-दिन यही देखते रहते हैं और वह मोती को बेहताशा पीटने लगा। मोती बेहोश होकर गिर पड़ा तो उसे कई लातें मारी और घसीटकर प्लेटफार्म के अन्दर ले गया।"9 उस मासूम बच्चे के साथ पुलिस का यह बर्बर व्यवहार अत्यन्त अमानवीय है। जो अपने घर की जिम्मेदारी उठा रहा था। उसी को निरपराधी होते हुए भी पुलिस ने सलाखों के पीछे डालकर उसकी माँ को पंगु बना दिया था। मोती ने वह नोटों से भरा पर्स पुलिस को नहीं दिया जिसके कारण उसे यह दण्ड मिला।

कहानीकार मार्कण्डेय ने इस कहानी मे एक गरीब मासूम बच्चे की व्यथा को व्यक्त करने के साथ पुलिस प्रशासन की अमानवीयता पर व्यंग्य किया है। 'माँ जी का मोती' में निर्दोष को अपराधी बनाने की पुलिस की निर्दयी प्रवृत्ति वर्णित है।"10

बाल-मनोविज्ञान की जितनी भी कहानियाँ मार्कण्डेय ने लिखी उसमें उन्होंने अपने समय एवं संदर्भ का पूरी वास्तविकता के साथ प्रस्तुत किया है। जो हमारे समय में भी प्रासंगिक है। बाल-मनोविज्ञान पर आधारित मार्कण्डेय ने उपर्युक्त कहानियों के अतिरिक्त 'नीम की टहनी', 'सोहगइला', 'घी के दिये', 'गरीबों की बस्ती',

'बरकत' आदि कहानियाँ लिखकर अपने कोमल और बाल-हृदय की झांकी को प्रस्तुत किया है। इन्होंने कहीं पर नीली और रीती की मित्रता को दिखाकर ऊँच-नीच में सामान्यता दिखाने का प्रयत्न किया है तो कहीं ग्रामीण वातावरण में पले बच्चे मनोहर के मन में उठ रहे द्वन्द्व को व्यक्त किया है। कहीं पर गरीब बच्चे की विसंगतियों को दर्शाया है, तो कहीं उम्र से पहले ही बच्चे की समझदारी दिखायी है। इस तरह मार्कण्डेय ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अपनी कहानियों को आज के समय एवं संदर्भ में जोड़कर कुछ विशिष्ट बना दिया है। वह जिन स्थितियों को अपनी आँखों से देखते थे उन्हीं वास्तविकताओं को उजागर करते हुए कहानियों में नयी जान डाल देते हैं।

हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी कथाकार जैसे टामस हार्डी, शेक्सपीयर जैसे रचनाकारों ने भी अपनी रचनाओं में मासूमियत दर्शायी है। इन लोगों ने यह बताने का प्रयत्न किया है कि आज के समय में छल, फरेब, झूठ, अन्याय से भरे इस संसार में मासूमियत पहले भी छली गयी है और आज भी। फिर चाहे वह कोई मासूम बच्चा हो, चाहे नौजवान या फिर वृद्ध। मार्कण्डेय ने बाल-मनोविज्ञान पर लिखी कहानियों में बच्चों की सहनशीलता, द्वन्द्व, प्रेम, लगाव, ईमानदारी आदि को चित्रित किया है। इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि मार्कण्डेय की कहानियों में बाल-मनोविज्ञान का मनोरम चित्रण है और इनकी कहानियां नवीन और रोचक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 डॉ.. सुरेन्द्र प्रसाद, मार्कण्डेय का रचना संसार, उद्धत मधुरेश, प्रकाशक, कानपुर, वर्ष-2001, पृष्ठ-13

2 मार्कण्डेय, मार्कण्डेय की कहानियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-, 2010, पृष्ठ-30

3 मार्कण्डेय, पान-फूल, वही, पृष्ठ-32

4 मार्कण्डेय, मार्कण्डेय की कहानियाँ, वही, पृष्ठ-171

5 डॉ.. जिभाऊ शामराव मोरे, मार्कण्डेय का कथा साहित्य और ग्रामीण, सरोकार, विकास प्रकाशन, कानपुर, वर्ष-2010, पृष्ठ-73

6 मार्कण्डेय, मार्कण्डेय की कहानियाँ, वही, पृष्ठ-94

7 मार्कण्डेय, मार्कण्डेय की कहानियाँ, वही, पृष्ठ-94

8 मार्कण्डेय, हलयोग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-2012, पृष्ठ-109

9 मार्कण्डेय, हलयोग, वही, पृष्ठ-111

10 अनहद-3, संपादक-संतोष कुमार चुतर्वेदी, जनवरी-2013, इलाहाबाद, पृ.सं.235